धर्मो रक्षति रक्षित: श्री शिवाश्रम:

विश्वगुरु भारतम्

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
(University of Spirituality)
Prospectus 2024-25

(अध्यात्म, योग, आयुर्वेद द्वारा आत्मा, मन, शरीर की पूर्ण चिकित्सा का एकमात्र धार्मिक संस्थान)

संकल्प - विश्व एवं राष्ट्र में अध्यात्म दर्शन, भक्ति, योग, आत्मानुभूति, प्रेम, शांति, सद्भावना, विश्वबंधुत्व जागरण।

कार्यालय

शिवाश्रम, बिण, एपीएस तिराहा, पिथौरागढ़, उत्तराखंड, भारत (पि. को. 262501)

संपर्क सूत्र - 9728877928, 9917712188

ईमेल – Aadhyatmikuniversity@gmail.com

वेबसाइट – Www.Aadhyatmikuniversity.in

*****नोट – यह विश्वविद्यालय किसी भी प्रकार के सर्टिफिकेट अथवा डिग्री प्रदान नहीं करता है। जनमानस में आध्यात्मिक जागृति का प्रचार प्रसार ही हमारा परं उद्देश्य है।***

संवैधानिक अधिकार - संविधान के अनुच्छेद 25 – 28 (धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार) के आधार पर स्थापित।

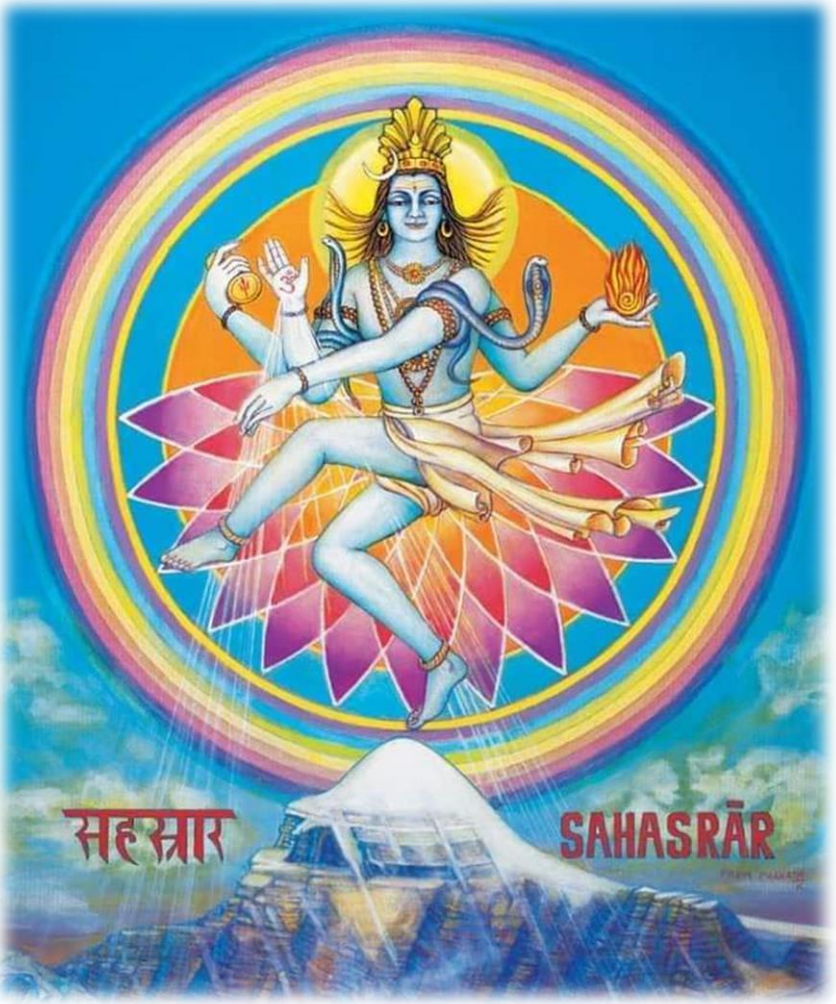
सहस्रार
SAHASRĀR

संस्थापक संदेश

प्राचीन भारतीय सनातन धर्म संस्कृति एवं प्राच्य ज्ञान विज्ञान परम्परा के संवर्धन एवं व्यापक प्रचार प्रसार के लिए समस्त सनातन धर्मानुलंबी जनमानस के सहयोग से देवभूमि पिथौरागढ़ में आध्यात्मिक विश्वविद्यालय निर्माण हो रहा है।

यह विश्वविद्यालय मानस खण्ड का एक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक केन्द्र बनने जा रहा है।

विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य संपूर्ण राष्ट्र, राज्य, जनपद और क्षेत्र के समस्त जनमानस को सनातन धर्म संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान, गुरुकुलीय शिक्षा, योग शिक्षा, आयुर्वेदिक शिक्षा, प्राकृतिक/पंचकर्म चिकित्सा प्रशिक्षण, शास्त्रीय संगीत, नृत्य प्रशिक्षण, पारमार्थिक/नैतिक शिक्षा इत्यादि कार्यों का शिक्षा, शिक्षण एवं प्रचार प्रसार करना है।

वर्तमान समय में प्राचीन सनातन संस्कृति के समुत्थान के लिए आध्यात्मिक विश्वविद्यालय का निर्माण भारतीय सनातन धर्म-संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान को जन जन पहुंचाने के लिए अति आवश्यक प्रतीत होता है अतः परं पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यह विश्वविद्यालय जन कल्याण एवं आदर्श राष्ट्र के निर्माण में परं कल्याणकारी सिद्ध होवे।

संस्थापक

डॉ सूरज प्रकाश जोशी

कुलपति संदेश

आत्म ज्ञान की खोज ही व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग की ओर ले जाती है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति सदैव आत्मज्ञान की खोज करता रहता है। जीवन में आत्म खोज की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। जब आत्म खोज की भूख बढ़ती है तो व्यक्ति किसी सद्गुरु अथवा मार्गदर्शक का अन्वेषण करता है। इस खोज को पूर्ण करने में उसका पूर्ण जीवन बीत जाता है। इस खोज को सहज बनाने के लिए समस्त जनमानस के सहयोग से आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य ही अध्यात्म योग के माध्यम से आध्यात्मिक यात्रा को प्रारंभ कराना है तथा मनुष्य को वास्तविक बोध कराने के लिए एक मंच तैयार करना है। आइए हम सब इस ओर बढ़ने का प्रयास करें। आत्म चिंतन, एकाग्रता, और सत्य सनातन धर्म में वर्णित नियमों का अनुपालन करते हुए अपने जीवन को सुखमय बनाएं।

भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रार्थना है कि 'पृथ्वी पर मानव सुखी हो तथा सम्पूर्ण विश्व में ईश्वरीय राज्य की (सनातन धर्माधिष्ठित राज्य की) पुनर्स्थापना होने हेतु 'आध्यात्मिक विश्वविद्यालय' सहायक हो'।

कुलपति

आचार्य आशुतोष दीक्षित

HIG-3-A/B6/3/2024-XXIV-C-3-Higher Education Department

I/180892/2024

संख्याः 38 /XXIV-C-3/2024-13(04)/2024-E-67267

प्रेषक,

जे0 पी0 बेरी,
अनु सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

आचार्य विजय प्रकाश जोशी, अध्यक्ष,
श्रीशिवाश्रम संस्था, होटल पार्क रॉयल,
नियर सल्मोड़ा पेट्रोल पंप, जाजरदेवल,
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड।
(Email : shivashramshiv@gmail.com)

उच्च शिक्षा अनुभाग–3 देहरादून, दिनांकः 09 जनवरी, 2024
विषयः 'आध्यात्मिक विश्वविद्यालय' की स्थापना के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र दिनांक 07 अक्टूबर, 2023 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके माध्यम से आपके द्वारा 'आध्यात्मिक विश्वविद्यालय' नाम से निजी विश्वविद्यालय को जनपद–पिथौरागढ़ में स्थापित किये जाने की अपेक्षा की गयी है।

2– इस संबंध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि कृपया शासनादेश संख्या–391/XXIV(N)-(68/12)/2015, दिनांक 16.04.2015 (यथासंशोधित) के प्रावधानों के अनुरूप प्रस्ताव के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करें।

संलग्नकः यथोक्त।

भवदीय

Signed by J P Beri
Date: 09-01-2024 16:30:27
(जे0 पी0 बेरी)
अनु सचिव।

सत्यमेव जयते

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

Central Registration Centre

Certificate of Incorporation

[Pursuant to sub-section (2) of section 7 and sub-section (1) of section 8 of the Companies Act, 2013 (18 of 2013) and rule 18 of the Companies (Incorporation) Rules, 2014]

I hereby certify that AADHYATMIK PADDHATI FOUNDATION is incorporated on this EIGHTH day of APRIL TWO THOUSAND TWENTY THREE under the Companies Act, 2013 (18 of 2013) and that the company is Company limited by shares

The Corporate Identity Number of the company is **U88900UT2023NPL015446**

The Permanent Account Number (PAN) of the company is **AAYCA4827G***

The Tax Deduction and Collection Account Number (TAN) of the company is **MRTA19783B***

Given under my hand at Manesar this EIGHTH day of APRIL TWO THOUSAND TWENTY THREE

Signature Not Verified
Digitally signed by
DS MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS 10
Date: 2023.04.15 21:52:46 IST

PM Mohan

Assistant Registrar of Companies/ Deputy Registrar of Companies/ Registrar of Companies

For and on behalf of the Jurisdictional Registrar of Companies

Registrar of Companies

Central Registration Centre

Disclaimer: This certificate only evidences incorporation of the company on the basis of documents and declarations of the applicant(s). This certificate is neither a license nor permission to conduct business or solicit deposits or funds from public. Permission of sector regulator is necessary wherever required. Registration status and other details of the company can be verified on mca.gov.in

Mailing Address as per record available in Registrar of Companies office:

AADHYATMIK PADDHATI FOUNDATION

DEWAL, POST OFFICE JAJAR DEWAL,PITHORAGARH,Jajardewal,Pithoragarh,Pithoragarh-262540,Uttarakhand

*as issued by Income tax Department

अनुक्रमांक

1. प्राक्कथन 1
2. अध्यात्म शिक्षा की आवश्यकता 4
3. विश्वविद्यालय के संस्थापक का जीवनवृत्त 6
4. प्राचीन भारतीय शिक्षा 8
5. आधुनिक शिक्षा का स्वरूप 11
6. शिक्षा और अध्यात्म का समन्वय 16
7. आध्यात्मिक शिक्षा का वास्तविक स्वरूप 19
8. आध्यात्मिक विश्वविद्यालय का महत्व 21
9. पाठ्यक्रम 22
10. ..... प्रमुख संकाय 23
11. ..... योग्यता विवरण 25
12. ..... प्रकाशन विभाग / ग्रंथालय 26
13. ..... विश्वविद्यालय निर्माण के लिए फाउंडेशन का खाता विवरण 27
14. ..... पाठ्यक्रम का नाम/उपाधि 28

15. ..... विश्वविद्यालय के प्रमुख पदाधिकारी गण..... 28
16. ..... विश्वविद्यालय समिति परामर्श मंडल 28
17. ..... सनातनधर्म संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित 32
18. ..... आध्यात्मिक पद्धति फाउंडेशन के प्रमुख उद्देश्य 33
19. ..... फाउंडेशन द्वारा किए गए कार्यों का विवरण 34

प्राक्कथन

प्रत्येक मनुष्य को इस धरा पर एक सीमित जीवन मिला है। इसमें हमारे पास यह दुर्लभ अवसर है कि हम अपने जीवन के उद्देश्य की खोज करें और इसके जन्म-मृत्यु के मूल कारण को समझने का प्रयत्न करें। आध्यात्मिकता जीवन रहस्य का सार्वभौमिक साधन है। प्राचीन काल से ही ऋषियों, संतों और महात्माओं ने जीवन और मृत्यु के रहस्य को खोजने का अथक प्रयास किया। अंततः वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हम इस रहस्य को आध्यात्मिक स्तर पर ही जान सकते हैं। आध्यात्मिक यात्रा आत्मज्ञान के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिससे अध्यात्म के विभिन्न स्तरों अनुभव होता है, जो हमारी बुद्धि और मन से परे है। अध्यात्म एक ऐसा विज्ञान है जो हमारे जीवन में प्रेम, शांति, प्रसन्नता, निर्भयता और विवेक की शक्ति प्रदान करता है। यह हमारे मानसिक और आंतरिक जीवन को समृद्ध बनाता है। अध्यात्म का मूल सिद्धांत यह है कि हममें से प्रत्येक वास्तव में एक आत्मा है, जो कि थोड़े समय के लिए इस भौतिक शरीर में प्रविष्ट हुई है। आइए इसको समझने का प्रयास करें।

आधुनिक जीवन में जब तक मनुष्य आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक दुःखों से निवृत्ति नहीं पा जाता तब तक जन्म मरण के आवागमन से पार नहीं जा सकता। सभी दर्शन शास्त्र अपने-अपने अनुभव और प्राकृतिक साक्ष्यों से इन दुखी कारण और निवृत्ति मार्ग का दर्शन कराने का सतत् प्रयास कराते आए हैं वे सभी एक मत में इस विचार का प्रतिपादन करते हैं कि अविद्याकृत प्रपंच से मुक्ति पाना ही मोक्ष हैं। आध्यात्मिक खोज का प्रारंभ कभी भी हो सकता है। इस खोज में गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक होता है। इसके साथ ही स्वयं को आध्यात्मिक अनुसंधान में लीन करना पड़ता है। साधनाओं के अभ्यास से ही बोध की अवस्था प्राप्त की जा सकती है। सत्य की खोज में अधिक से अधिक समय देना पड़ता है। जीवन के रहस्य समझने के लिए एक लंबी अवधि तक मनन करते हुए अपनी खोज जारी रखनी पड़ती है, जिसके अंत में आत्मबोध प्राप्त होता है। आत्मसाक्षात्कार के बाद यह ज्ञात होता है कि अध्यात्म का हर मार्ग जिस कड़ी से जुड़ा है, वह है आत्मदर्शन।

सत्य के सभी मार्गों का प्रारंभ अलग-अलग प्रकार से होता है, लेकिन सभी के अंत में एक ही आत्मबोध अवस्था ही प्राप्त होती हैं। संसार के दुखमय स्वभाव से मुक्त होने के लिये योग (कर्म, ज्ञान या भक्ति इत्यादि) मार्ग को अपनाया जाता है। मोक्ष जीवन की अंतिम परिणति है। कुछ लोग अज्ञानवश जीवन मुक्ति को मृत्यु समझते हैं और कुछ इस मार्ग को सन्यासी, बाबा और घर बार छोड़ने वाला मार्ग अथवा साधन बताते हैं। हम इस संस्थान के माध्यम से समस्त जनमानस को यह बताने का प्रयास कर रहे कि मनुष्य सशरीर विदेह मुक्ति प्राप्त कर सुख-दुख के भावों का विनाश कर सकता है और अपनी अवस्था पूर्ण करने के बाद अथवा देह त्यागने के बाद आवागमन के चक्र से सर्वदा के लिये मुक्त हो सकता है। वह परमानन्द की स्थिति को प्राप्त होकर समस्त द्वंद्वों का अंत करके अद्वैतानुभूति की स्थिति पाकर जीवन मुक्ति पथ पर बढ़ते हुए जीवन के परे लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। जब मनुष्य आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ करता है तो उसमें कुछ विलक्षण परिवर्तन होने आरंभ हो जाते हैं जैसे कि सांसारिक, भौतिक संबंधों और वस्तुओं के प्रति विरक्ति का भाव, मनुष्य एवं जीवों के प्रति दया, प्रेम करुणा का भाव, धार्मिक कार्यों में रुचि, ईश्वर में अनन्य भक्ति, श्रद्धा और विश्वास जागरण, ऐसी स्थिति में वह सद्गुरु को खोजने का प्रयास करता है उसके भीतर अनन्त प्रश्न और विचार प्रस्फुटित हो उठते हैं। उन प्रश्नों या विचारों को जब वह समाज के सम्मुख प्रकट करता है तो उनका अतिशय विरोध होना प्रारम्भ हो जाता है यदि भाग्यवशात् उसे सद्गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है तो वह योग साधना से ज्ञान की व्यापकता तक पहुंचकर आध्यात्मिक जान प्राप्त करके आत्मस्वरूप (ब्रह्मस्वरूप) का साक्षात्कार कर लेता है। लेकिन यदि उसको सद्गुरु का सान्निध्य प्राप्त नहीं होता तो ऐसे लोगों को शास्त्रों एवं महापुरुषों के विचारों को मुमुक्षु भाव से श्रवण, मन एवं निदिध्यासन की विधि का पालन करते हुए योग साधनाओं में प्रवृत्त होना पड़ता है। यह आध्यात्मिक पद्धति उन सभी जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं के लिए अत्यंत आवश्यक है जो जीवन मुक्ति पथ की यात्रा प्रारम्भ कर चुके हैं अथवा यात्रा प्रारम्भ करना चाहते हैं। हमारा प्रयास होगा कि हम ऐसा परिवेश उपलब्ध कराएं जहां मानव मात्र के परं उद्देश्य सत्यान्वेषण एवं सत्यानुभव हो। जिसके लिए हम सदा कृत संकल्प है।

यह आध्यात्मिक विश्वविद्यालय एक वैश्विक आध्यात्मिक विचारधारा पर कार्य करता है। यह सनातन धर्म एवं दर्शन का मूलाधार "सत्य" का अन्वेषण करने का एक केंद्र है। यह केंद्र सत्यान्वेषी साधकों, अनुसंधाताओं और वैज्ञानिकों का एक अन्तर्राष्ट्रीय समूह है। सत्यान्वेषण ही इसका प्रमुख उद्देश्य है। इसकी चिंतनपद्धति विज्ञान, धर्म और दर्शन के संश्लेषण द्वारा आत्मचेतना के विकास की प्रेरणा प्रदान करना है। संस्थान का लक्ष्य सामाजिक आध्यात्मिक विकास तथा मनुष्य की प्रगति और कल्याण के लिए कार्य करना है। शिवाश्रम की स्थापना कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा संवत् 2075 सन् 2018 को की गई। 8 अप्रैल 2023 को आध्यात्मिक पद्धति फाउंडेशन (NGO) का पंजीकरण किया गया। यह संस्थान देवभूमि उत्तराखंड के धारचूला रोड, जाजर देवल, जनपद पिथौरागढ़ में स्थित है। यह संस्थान सत्यान्वेषी साधकों, पाठकों अध्यात्म-योग में अध्ययनरत छात्रों, शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों के लिए अत्यंत प्रेरणा स्रोत है और सत्यान्वेषण के मार्गदर्शन का एकमात्र संस्थान है। आशा करते हैं, आप सभी मुमुक्षु, साधकगण, भक्त अपनी सामर्थ्य के अनुरूप आत्म कल्याणार्थ और जन कल्याणार्थ हमारा सहयोग करेंगे तथा आध्यात्मिक पद्धति (मार्ग) पर चलकर अपने जीवन के परं उद्देश्य तक पहुंचने का प्रयास करेंगे।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

अध्यात्म शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान सामाजिक परिवेश ने हमें एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया है जहां हम अध्यात्म की जीवन में भूमिका के बारे में चिंतन करने लगे हैं। जिस प्रकार से युवा पीढी भौतिक संसाधनों के पीछे भाग रही है उसने उसे स्वयं के अस्तित्व की पहचान से कोसों दूर कर दिया है। मानव जीवन का क्या उद्देश्य होना चाहिए? हमें अपना उद्धार क्यों करना चाहिए? क्या यहाँ हम विलासितापूर्ण जीवन बिताने के लिए ही आये है? या फिर हमें कुछ और करना है कुछ और पाना है। क्या दर्शन की हमारे जीवन में कोई उपयोगिता है? वेदों का प्रादुर्भाव किस कारण से हुआ है? आत्मा का क्या रहस्य है? परमात्मा क्या है? "ब्रह्म" आनंद क्या है? स्वर्ग क्या है? आदि-आदि विचारों को हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए न कि क्षणिक सुखों के पीछे भागकर स्वयं के अस्तित्व को खतरे में डालना चाहिए। पञ्च तत्वों का जीवन में महत्त्व समझना अनिवार्य है ब्रह्माण्ड की संरचना व इसका निर्माण किसने किया और क्यों किया साथ ही संयम, शांतिपूर्ण जीवन, संतोषजनक जीवन, सामान्य जीवन, अनुशासित जीवन की कल्पना ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। यूं ही जानवरों की भांति हम यहाँ वहां विचरण न करें। जीवन को समझें।

मानव के वैज्ञानिक विचारों के प्रति विश्वास, भौतिकवाद के प्रति आस्था ने मानव को ऐसे मोड पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां मानव मूल्यों में दिन प्रतिदिन होता ह्रास चिंता का विषय हो गया है। वह यह भूल गया है कि उस परमपूज्य परमात्मा ने इस धरती पर उसे किस प्रयोजन के साथ भेजा है। स्वयं को जानना, स्वयं के होने का प्रयोजन, स्वयं की धार्मिक व सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकतायें आदि विषय उसके लिए कोई मायने या महत्व नहीं रखते। एक समय वह था जब भारत भूमि पर सत्य का बोलबाला था गुरुकुल बच्चों को सत्यमार्ग पर प्रस्थित करने के प्रेरणा केंद्र थे। बच्चों में सत्य, अहिंसा, विनम्रता, शिष्टता, दूसरों के प्रति मानवीय विचार, उदारता, क्षमा आदि गुणों का संचार किया जाता था। मानव को मानव बने रहने की प्रेरणा दी जाती थी। सांस्कृतिकता, धार्मिकता, सामाजिकता के साथ- साथ आध्यात्मिकता के गुणों से बच्चों को सिंचित, परिपूर्ण व अलंकृत

किया जाता था ताकि वे एक स्वस्थ समाज की स्थापना में अपना योगदान दे सकें।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भौतिकवाद को तो स्थान है किन्तु आध्यात्मिकता को कोई महत्व नहीं दिया गया जिसके परिणामस्वरूप समाज में विषम परिस्थिति का निर्माण हो गया है। भारतीय मनीषा का सर्वोत्कृष्ट चिन्तन अध्यात्म चिन्तन है, समग्र विश्व में इसी अपनी अद्भुत रहस्यमयी अनन्य चिन्तित विशिष्ट शैली और ज्ञान के आधार पर भारत, भारत कहलाता रहा है। भारत की यह भारतीयता बाह्य विशिष्टाओं के आधार पर न होकर अन्त चिन्तनप्रधान और सूक्ष्म से सूक्ष्मतम अदृश्य पदार्थों के गवेषणात्मक आधार पर रही है।

अध्यात्म भारतीय मनीषियों और ऋषियों का सदा सर्वदा से शोध का विषय रहा है, यह संसार जिन तत्वों को लेकर निर्मित है, निश्चित रूप से उसका कोई न कोई कर्ता अवश्य होना चाहिए। क्योंकि किसी भी कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। अत्यन्त सूक्ष्म जन्म मृत्यु से विहीन तथा सम्पूर्ण प्राणियों में जीवनदायक सत्ता के रूप में विद्यमान यह आत्म-तत्व, ऋषियों मुनियों के लिए सदा सर्वदा खोज का विषय बना रहा। अध्यात्म विद्या का उत्कृष्ट निरुपण क्रमशः आत्म-तत्व के विवेचन में भारतीय मनीषियों ने तो अपना सर्वस्वज्ञान और बुद्धिवैभव प्रदर्शित किया है कुछ पाश्चात्य चिन्तकों ने भी इस पर वृहद विवेचन किया है। यह आत्म-तत्व इन वाह्य भौतिक चक्षुओं से लक्ष्य न होकर ज्ञान चक्षुओं के द्वारा परिलक्षित होता है।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। बृह 3. 2/4/5

भारतीय प्रज्ञा के मूल वाहक ऋषियों महर्षियों ने भौतिक जगत् से भिन्न आध्यात्मिक जगत् की खोज से अपने चिन्तन का मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया और इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने वेदों, उपनिषदों पुराणों के माध्यम से आत्म-तत्व का बोध सभी मानवों के लिए सुलभ बनाया। जो वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होती है, वह उतनी ही महत्वपूर्ण एवं उपादेय होती है, साथ ही उसका निरूपण भी अत्यन्त कष्टसाध्य होता है, और यह आत्म-तत्व इसी अदृश्य कोटि में होने के कारण उनके ग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय बना।

विश्वविद्यालय के संस्थापक का जीवनवृत्त

डॉ सूरज प्रकाश जोशी बाल्यकाल से ही अध्यात्म एवं योग से जुड़े हैं। आपने अपने अध्ययन काल में हरिद्वार, काशी, मथुरा, वृंदावन, उज्जैन आदि धार्मिक स्थलों में रहकर संत, महात्माओं से अध्यात्म और योग का गहनता से अध्ययन किया है। आप बाल्यकाल से आध्यात्मिक गूढ़ रहस्यों के अध्ययन एवं खोज करने के जिज्ञासु रहे हैं। आप विगत दो वर्षों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अध्यात्म- योग पर निरंतर लेखन कार्य भी करते रहते हैं। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (वाराणसी) से स्नातक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) से आचार्य और श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) से सांख्य-योग दर्शन पर विद्यावारिधि (PhD) की उपाधि प्राप्त की है। आप वर्तमान में इण्टरमीडिएड कॉलेज में संस्कृत अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं साथ ही अध्यात्म-योग पर प्रवचन तथा सत्संग के माध्यम से लोगों को अध्यात्म की शिक्षा दीक्षा प्रदान कर रहे हैं। जनमानस को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने के लिए आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की स्थापना करने का विचार आपकी दूरदृष्टि का परिणाम है। ।

आपने अपना संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार प्रसार करने के लिए समर्पित किया है।

आपका का जीवन आध्यात्मिक मार्ग के पथिकों को विशेष बल, उत्साह, आनंद एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने वाला है। आपका संपूर्ण जीवन अत्यंत परिश्रम और संघर्षों से भरा हुआ है फिर भी आपने जीवन में भौतिक वस्तुओं को विशेष महत्व न देकर प्रधान महत्व ज्ञान को दिया। आचार्य जी कहते हैं कि स्वस्वरूप बोध के सम्यक् ज्ञान के लिए आध्यात्मिक यात्रा अत्यंत आवश्यक है। साधकों को तथा जिज्ञासु जनों को भी आध्यात्मिक पद्धति की परम कल्याणकारिणी साधना का महत्व समझने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। मनुष्य को स्व कल्याणार्थ परम पुरुषार्थ रुपी साधना को आदरबुद्धि से अवश्य ही साधते रहना चाहिए। मनुष्य को आत्मज्ञान का ब्रह्मविद्या का सत्संग, भजन का

अवलंबन लेकर अपने अविनाशी स्वरुप ईश्वर को ही एकमात्र अपनी शांति का, निर्भयता का आधार बनाना चाहिए क्योंकि इस क्षणभंगुर संसार में जो दृष्टि में, प्रतीति में आता कुछ भी वह सत् ना होकर प्रतीतिमात्र भ्रांति, आभासमात्र है और ईश्वर ही सत् है एवं वही हममे आत्मस्थ होकर बैठे हैं अथवा यो कहो कि वही हमारा वास्तविक स्वरुप है। अज्ञान से उत्पन्न भ्रान्ति के कारण ही हम अपने को जन्मने और मरने वाला समझते हैं और इस अज्ञानरूपी भ्रान्ति का नाश ज्ञान से ही संभव है अथवा यो कहो कि अज्ञान ही भ्रान्ति है और भ्रान्ति ही अजान है, वास्तविकता में तो हम ज्ञान – अज्ञान से परे सदा मुक्त, केवल आत्मस्वरूप ही हैं और ऐसे आत्मस्वरूप का बोध तत्व-ज्ञान से ही संभव है। ऐसे परम दुर्लभ सत्संग को इस घोर कलिकाल में भी जीवमात्र को सुलभ कराने हेतु एवं ईश्वर-प्राप्ति के पथिकों का मार्गदर्शन करने हेतु समाज की परम सुहृदता की भावना हृदय में धारण करते हुए ही आध्यात्मिक पद्धति की स्थापना की गई। आचार्य जी के आगामी सत्संग कार्यक्रमों तथा प्रवचनों की जानकारी हमारे बेबसाइट हमारे चैनल के माध्यम से दी जाएगी जिनका लाभ लेकर आप अपने जीवन को भक्ति तथा ज्ञान पथ पर चलते हुए आध्यात्मिकता यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके साथ ही संस्थान द्वारा आचार्य जी के सत्संग, प्रवचनों का लाभ उठा सकते हैं। इस घोर कलिकाल में भी ऐसे परम पावन, अति दुर्लभ, वेदों के सार-स्वरूप परम पावन सत्संग का लाभ लेने हेतु संस्थान में भी संपर्क कर सकते हैं। आचार्य जी कहते हैं कि सांसारिक शिक्षा केवल मानव का बाह्य विकास करती है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए आध्यात्मिक ज्ञान (परमात्मा से मिलन) आवश्यक है। अनुभूति आत्मा की अत्यंत सूक्ष्म तरंगों का अनुभव है जो अध्यात्म योग की पराकाष्ठा से उत्पन्न होती है जब तक मनुष्य अनुभूति के सोपानों में चढ़कर पात्रता अर्जित नहीं करता तब तक अनुभूति असंभव है।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

प्राचीन भारतीय शिक्षा

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को केन्द्र में रखकर प्रदान की जाती थी। मुण्डकोपनिषद् के अनुसार दो अनुसार दो प्रकार की विद्याएं मानी गई हैं। परा अपरापरा यौगिक साधना है और परा का सम्बन्ध सांसारिक अभ्युदय से है। जिस विद्या से अक्षरब्रह्म का ज्ञान होता है, वह परा विद्या है और जिस विद्या से आध्यात्मिक ज्ञान हो अपरा विद्या कही गई है।विश्व में भारतीय ज्ञान विज्ञान परम्परा श्रेष्ठ तत्वों, दर्शन के परम चिन्तन, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक विचारधाराओं तथा उनके क्रमिक विकास का ज्ञान प्रत्येक धार्मिक जनमानस को अवश्य होना चाहिए। शास्त्रों के निहित गूढार्थ को जानने के लिए आप हमारे विश्वविद्यालय से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं।

इस अलौकिक विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक शिक्षा के सभी प्रमुख सोपानों को सम्मिलित किया गया है। अध्यात्म और योग को जनसामान्य के ज्ञानार्जन को आधुनिक शिक्षण पद्धति में अध्यात्म योग का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त सरल और रुचिकर है। इसी पद्धति के अनुरूप अध्यात्म योग के शिक्षण को सरल, सरस, रुचिकर और बोधगम्य बनाने के लिए हमने आध्यात्मिक अनुभूतियों का प्रणयन किया है। किसी भी युग में देश के विकास में शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षा नीति की अहम भूमिका होती है वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में हम अपने उन महापुरुषों के आदर्श व अध्यात्म विद्या को बिल्कुल भूल गये है तथा भूलते जा रहे है, जिसे प्राप्त करके हमारा जीवन दुख व क्लेश के बन्धनों से छूट जाता था। हमें तो उस महान आदर्श अध्यात्म विद्या को जानने की अतीव आवश्यकता है। धार्मिक पुस्तक के पठन-पाठन से हम समझ बैठते है कि हमने बहुत जान लिया जिससे व्यर्थ के बाद विवाद में पड़ने तथा हम व्यर्थ अहंकार मोल ले लेते है। मेरा अपना विचार है कि पुस्तकों के ज्ञान से ही ज्ञान पूरा नही होता न उसकी बाते ठीक-ठीक

समझने में आ सकती है जब तक की कोई अनुभवी महात्मा (गुरु) हमें उनका ठीक-ठीक अनुभव न करा दे। अतएव यह परमावश्यक है कि हम उन धार्मिक ग्रन्थों तथा पुस्तकों के ज्ञान का तत्व रूप समझ ले और प्रत्यक्ष अनुभव कर ले जिससे कि हम अपना कल्याण कर सके एवं साथ ही साथ समाज को भी सुखी बनाकर सतयुग का आनन्द प्राप्त कर सके। हम उन महापुरुषों से अध्यात्म विद्या प्राप्त करके अपने को जीवन को भक्तिमय और आध्यात्मिक बना सकते हैं। इस अमूल्य मानव शरीर की प्राप्ति बार-बार नहीं होती। इस मानव शरीर में पड़ा परमात्मा का अंश आत्मा जीवात्मा को चौरासी लाख योनियों में जाकर नाना प्रकार के पीड़ाओं की ताप सहनी पडेगी फिर इस दुख हमें कौन बचायेगा? मनुष्य जीवन का मुख्य ध्येय यह होना चाहिए कि जीतें जो अपने प्रभु की प्राप्ति कर ले।

भारतीय अध्यात्म को आज पूरा विश्व स्वीकार कर चुका है गीता में कहा गया है कि **"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"।** ज्ञान से पवित्र सृष्टि में कुछ है ही नहीं वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची है। ज्ञान का आधार विद्या है। क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है। आध्यात्मिक अवस्था व्यक्तिगत रूप से मुक्ति प्राप्त करना नहीं अपितु व्यक्तित्व के पूर्ण विकास को प्राप्त करना है। मानव प्रकृति के सभी स्तरों का आधार सत्यकर्म, सत्यधर्म व सत्य अध्यात्म ही है। पूर्णयोग में हमारी अन्तः स्थिति यह होती है कि भागवत् शक्ति हमारे समग्र जीवन को ही उपाय के रूप में व्यवहत करती है। तप के द्वारा शरीर और मन की दृढ़ता और स्थिरता को प्राप्त किया जाता है। तथा स्वाध्याय अर्थात् शास्त्रों के अध्ययन एवं चिन्तन, मनन के द्वारा विविध शंकाएँ दूर होकर अध्यात्म का पथ प्रशस्त होता है। श्वेताश्वेतरोपनिषद् में लिखा है कि मुमुक्षुओं के लिए भी ईश्वर कृपा आवश्यक है-

यो ब्रहमाणं विद्याति पूर्व यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।
तं देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वे शरणमहं प्रपद्ये॥

श्वेताश्वतरोपनिषद 6/8

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है-

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संग त्यक्त्वात्मशुद्धये॥ (गीता 5/11)

यहाँ सर्ववृतियों के निरोध होने पर शुद्ध परमात्म रूप में अवस्थिति होती है यह जान व उपासना के द्वारा सम्भव होता है इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर प्राप्ति रूपी आध्यात्मिक प्रयोजन के लिए कभी कहीं पर कर्म, कहीं ज्ञान कहीं उपासना, तो कहीं कर्म व ज्ञान, कहीं ज्ञान व उपासना कहीं उपासना व कर्म, तो कहीं कर्म, जान व उपासना तीनों का समावेश होता है।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

आधुनिक शिक्षा का स्वरूप

हमारी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था 'धनार्जन' को प्राथमिकता देती है। हमें वही पढ़ना चाहिए, जिससे धन कमाया जा सके। आज विद्या उसे कहा जाता है, जिससे नौकरी मिल सके "सा विद्या या नियुक्तये"। हमारी सरकार तथा शिक्षाविद् भी ऐसी ही योजनाएँ बनाते हैं, जिससे शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाया जा सके। आज अशिक्षा को समस्या न मानकर बेरोजगारी को समाज की सबसे बड़ी समस्या माना जाता है। इसी कारण शिक्षा व्यवस्था में निरन्तर सुधार का कार्य किया जा रहा है। कारण स्पष्ट है कि आज की शिक्षा से सभी असन्तुष्ट हैं। आज की शिक्षा हमारी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर रही है। इसी कारण शिक्षा में निरन्तर सुधार या परिवर्तन किया जा रहा है। शिक्षा में हो रहे सुधारों से हमारी शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। निरन्तर परिवर्तन तथा सुधारों से शिक्षा का आधुनिक स्वरूप भ्रम बन गया है। अब जब शिक्षा ही भ्रम बन गई है तो शिक्षक, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षार्थी, शिक्षा के उद्देश्य तथा समाज सबकुछ भ्रम ही हो गये हैं। कोई सुखी नहीं है। छात्र, अभिभावक, अध्यापक, शिक्षित व्यक्ति शासक प्रशासक सभी दुखी हैं। शिक्षा किसी की अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पा रही है। समाज की बढ़ती हुई अपेक्षाओं की पूर्ति में आधुनिक शिक्षा असहाय दिख रही है। ऐसी स्थिति में कुछ तो सोचना होगा। आधुनिक शिक्षा जहां लोकसंग्रह या जीविकोपार्जन की शिक्षा देती है वहीं आध्यात्मिक शिक्षा से अमृतत्व का पाठ समझाया जा सकता है। समाज में सभी को रोजगार की आवश्यकता है ऐसा नहीं है और न ही सभी अमरत्व की चाहत ही रखते हैं। इस तरह जो लोग रोजगार चाहते हों उन्हें रोजगार की शिक्षा तथा जिन्हें रोजगार की आवश्यकता नहीं है उन्हें अन्य विद्या का पाठ सिखाया जाना चाहिए। मोक्ष की प्राप्ति भूखे की विद्या नहीं हो

सकती उसकी विद्या तो रोटी है। किसी को बलात् आधुनिकता अथवा आध्यात्मिकता का पाठ नहीं पढ़ाया जा सकता।

जब तक समाज है तब तक शिक्षा रहेगी। विद्वान् इस विषय में सोचते रहे हैं। सुधार तथा परिवर्तन होता रहेगा किन्तु 'सत्य' सदा एक ही होता है और एक ही रहेगा। भले ही देशकाल और परिस्थिति के कारण कुछ क्षण के लिए हमें अन्य प्रकार से सत्य का आभास हो किन्तु सत्याभास सत्य नहीं हो सकता। आध्यात्मिक शिक्षा से ही परमानन्द या शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होगी। तथा तात्कालिक शिक्षा से जीवन चला है और चलेगा। हम समझ सकते हैं कि मानव शिशु माँ की गोद में खेलता है फिर वहाँ से मुक्त होता है और धीरे-धीरे अलग हो जाता है। वह स्वतन्त्र रूप से अपना सामाजिक एवं आर्थिक अस्तित्व बनाता है। उसके पश्चात् वह सोचता है कि जितने बन्धन वह छोड़ चुका है। उनसे कहीं अधिक बन्धनों के पाश में वह बधा हुआ है। बाहरी दुनियों की चकाचौंध उसे न केवल बन्धन में जकड़ती है अपितु अन्धा भी बना देती है। वह जो कुछ देखता है उसकी वास्तविकता पर उसे सन्देह होता है। यहाँ तक कि उसे शब्दों तथा उनके अर्थों पर भी सन्देह होने लगता है। संवेदनशील मनुष्य को अनुभव होने लगता है कि वह तो कारागार में बन्द है। उसे अनुभव होता है कि प्रत्येक परिस्थिति उसके ज्ञान पर पर्दा डाल रही है। उसकी आत्मा मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहती है तथा अपने इन्द्रियों, तर्क तथा भाषा क्षेत्र से परे इन्द्रियातील ज्ञान के अनुभव का प्रयास करती है। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है-

"यतो वाचा निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" अर्थात् जहाँ से वाणी उसमें (परमानन्द में) मन के साथ प्रवेश न पाकर लौट जाती है। वहीं मनुष्य की आत्मा परमानन्द के क्षणों का अनुभव कर समस्त बन्धनों को पार कर जाती है। वह स्वतन्त्र हो जाता है अर्थात् बन्धन मुक्त हो जाता है। शिक्षा की इसी भावना का गुणगान या बखान उपनिषद् करती है। उपनिषद् कहती है-

सा विद्या या विमुक्तये। अर्थात् विद्या या शिक्षा वही है जो बन्धनों से मुक्त करती है।

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्।। अर्थात् ज्ञान ही मनुष्य का तृतीय नेत्र हैं।

जो उसे समस्त तत्वों को मूल को समझने में समर्थ बनाता है तथा उसे सही कार्यों में प्रवृति करता है। महाभारत का कथन है सद् विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं होता है।

नास्ति विद्यासमं चक्षुनास्ति सत्यसमं तपः।

विद्या हमें परलोक में मोक्ष तथा इस संसार में समृद्धि और प्रगति दिलाती है। विद्या से हमें जिस ज्योति की प्राप्ति होती हैं वह संशयों का उच्छेदन करती है। विद्या समस्त समस्याओं और दुःखों को दूर करने का मार्ग प्रदर्शिका है तथा जीवन में वास्तविक महत्व को समझने योग्य बनाती है। जिसे जान की ज्योति उपलब्ध नहीं, वह अन्धा है। सुभाषित रत्न संग्रह में कहा है।

अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शनम्।
सर्वस्य लोचनम् शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।

शिक्षा से मनुष्य को सही दृष्टिकोण उपलब्ध होता है उससे उनको बुद्धि बल और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। प्राचीन भारतीयों ने दृढ़ता से कहा था कि शिक्षा से विकसित और परिष्कृत बुद्धि ही सच्चा बल है। बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। विद्या (शिक्षा) से ही मनुष्य जीवन के परं लक्ष्य मोक्ष मार्ग तक पहुंच सकता है। सम्पूर्ण मानवीय आनन्दों का मूल विद्या ही है, उससे हमारी योग्यता में वृद्धि होती है, राज्यसभा और जनसभा में आदर मिलता है, जिससे धन और यश दोनों की उपलब्धि होती है।

विद्याध्ययन से प्राप्त हुए धन से हमें सुख की ही प्राप्ति नहीं होती बल्कि उससे धार्मिक और लोकहित के पुण्य कार्यों की ओर हमारी प्रवृत्ति भी होती है। अप्रत्यक्ष रूप में विद्या धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनात्धर्मः ततः सुखम्।।

इस प्रकार शिक्षा इहलोक और परलोक हमारे दोनों पुरुषार्थों की सिद्धि करती है। विद्या (शिक्षा) से हमें जो प्रकाश, परिज्ञान और नेतृत्व प्राप्त होता है उससे हमारा पूर्ण रूपान्तर हो जाता है।

भारतीय शिक्षा परम्परा में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। तभी ऋषियों ने संसार के सभी मानवों को भारत के सदाचार परायण लोगों से शिक्षा प्राप्त करने को कहा है-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादराजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

(मनुस्मृति)

भारतीय विचार परम्परा के इतिहास में समग्र सनातन परम्परागत शास्त्रों का मूल उद्गम आध्यात्मिक शिक्षा ही है। आध्यात्मिक जान का वह मार्ग है जिसके बिना आत्म-ग्रन्थियाँ खोली नहीं जा सकती। इन ग्रन्थियों को खोलने के लिए गुरु शिष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं और शिष्य गुरु द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर उत्साह एवं उमङ्ग के साथ अग्रसर होते हैं क्योंकि ज्ञानमयी शक्ति के अभाव में मनुष्य का कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सकता है। ज्ञान ही वह माध्यम है, जिससे मानव जीवन में सार्थकता का सञ्चार होता है। तत्वज्ञान से युक्त मनुष्य अविद्या और विद्या में अन्तर करने में सक्षम होता है। यह कार्य प्रबुद्ध और सिद्ध गुरु के अधीन ही हो सकता है। ऐसी स्थिति में शिक्षार्थी के लिए शिक्षक की महत्ता सर्वाधिक हो जाती है। भारतीय ऋषियों एवं तत्त्ववेताओं ने मनुष्य के अन्तर्भूमि को श्रेष्ठता की दिशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का आविष्कार किया, जिनका

प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं, अपितु सूक्ष्म अन्तःकरण पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण, कर्म और स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर बढ़ने में सहायता मिलती है।

आजकल के माता पिता अपनी संतानों को धर्म-भक्ति का मार्ग नहीं सिखाते हैं। केवल रुपया कमा सके इसलिये पढ़ाते हैं। स्वयं भी पथ भ्रष्ट हो रहे हैं। अपने पुत्रों को भी भोगी विलासी बना रहे हैं। कन्याओं को बाल्यकाल से धर्म की शिक्षा दो तब वे अपनी संतानों को धर्म का मार्ग बतलायेगी। दुनिया में समय-समय पर ऐसी महान आत्माओं का जन्म हुआ हैं, जिनका जीवन एक प्रकाश स्तंभ के समान है जो निरंतर अपने अनुभूति परक ज्ञान से सारे जग को प्रकाशित करते रहते हैं। शिक्षा मानव जीवन में सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ तभी से शिक्षा का अस्तित्व है। मानव ने शिक्षा को आत्मसात् करके अपने अस्तित्व को बनाये रखा और सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वोच्च प्राणी का स्थान प्राप्त किया। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है। शिक्षा को किसी कार्य के निष्पादन तक ही सीमित नहीं किया जा सकता बल्कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में निहित आन्तरिक क्षमताओं का समग्र रूप से विकास करके सामाजिक एवं राष्ट्रीय सन्दर्भ में उपयोगी तथा संसाधन सम्पन्न व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

शिक्षा कल्पवृक्ष के समान है जिसमें मनोवांछित फल देने की शक्ति होती है। यही नहीं शिक्षा मन मस्तिष्क को विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसित होने की प्रेरणा भी देती है। प्राचीन भारतीय मनीषी इस तथ्य से भली भांति अवगत थे कि शिक्षा ही मानव एवं उसकी सभ्यता की बहुमुखी प्रगति का आधार है। अतः उन्होंने शिक्षा की ऐसी अनुकरणीय प्रणाली का प्रतिपादन किया जिसने न केवल वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रखा अपितु विभिन्न मौलिक विचारकों शिक्षाविदों को जन्म भी दिया। जिसके कारण प्रत्येक भारतवासी अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है।

शिक्षा और अध्यात्म का समन्वय

शिक्षा और अध्यात्म के बीच सामंजस्य और सहृदयता के उदाहरण हमें जितना प्राचीन शिक्षा प्रणाली में विद्यमान दिखाई देते थे। वो आज की शिक्षा प्रणाली में नहीं, आज की शिक्षा प्रणाली ने हमे चिंतन करने को मजबूर किया है। हमें खेलकूद और पढ़ाई के साथ साथ अध्यात्म को भी शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना चाहिए ताकि शारीरिक एवं मानसिक विकारों पर संयमित किया जा सके और मानसिक रूप से प्रसन्न होकर हम अपना आध्यात्मिक विकास कर सकें। यदि हम विश्व की महान विभूतियों के जीवन का आकलन करें तो हम पायेंगे कि सभी महान विभूतियों ने शिक्षा को ऐसा सशक्त माध्यम बताया जिससे होकर मानव अपना मानसिक विकास तो कर ही सके साथ ही साथ स्वयं को नियंत्रित करने के लिए अपना आध्यात्मिक विकास भी कर सके। जीवन में आराधना का अपना ही महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी कार्य के आरम्भ से पूर्व मानव परम्पूज्य परमात्मा की शरण को प्राप्त होता है तो निश्चित ही कार्य में सफलता मिलती है। मन को प्रसन्न रखने, आत्मिक शांति के साथ स्वयं को इस नाशवान जीवन से मोक्ष की ओर प्रस्थित करना अध्यात्म का महत्वपूर्ण कार्य माना गया है।

विश्व में जितनी भी महान विभूतियाँ हुई हैं उन्होंने कभी भी अपने जीवन में अध्यात्म का साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने दैनिक जीवन के अन्य कार्यों की भाँति अध्यात्म को भी अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग समझा। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में निहित गुणों से उसे अवगत कराना है साथ ही व्यक्ति को सम्पूर्ण मानव बनाना, उसे सम्पूर्णता की ओर अग्रसर करना, उसे सुनियोजित के साथ साथ उसे स्वस्थ बनाना स्वावलंबी बनाना और उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। प्राचीन काल में शिक्षा को मुक्ति मार्ग के रूप में संज्ञा दी जाती थी। वर्तमान में यह स्वयं को जीवित बनाए रखने और भौतिक संसाधनों के सुख की प्राप्ति का साधन मात्र हो गयी है। इसका मानव की मुक्ति से कोई सरोकार नहीं है। प्राचीन विचारकों एवं नीतियों ने शिक्षा को एक साधन के रूप में प्रस्तुत किया जो मानव दुर्बलताओं का नाश करती है। उसे स्थिरता प्रदान करती है एवं उसमें व्याप्त अज्ञान को दूर करती है शिक्षा अपने उद्देश्यों को केवल अध्यात्म से ही पूरा

कर सकती है। अध्यात्म की संकल्पना के बिना शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना असंभव है।

प्राचीन समय में शिक्षा का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवम् व्यक्ति के भीतर सद्गुण विकसित करना मुख्य उद्देश्य था। लेकिन शिक्षा के सर्वांगीण विकास के अर्थ को बहुत ही संकुचित दृष्टि से देखा जाने लगा है।

वर्तमान में शिक्षा को ग्रहण करने वाले भारतीय छात्रों के केवल दो उद्देश्य हैं-उच्च शिक्षा के किसी संस्था में प्रवेश पाना तथा नौकरी प्राप्त करना। उपर्युक्त उद्देश्यों में से किसी एक की प्राप्ति के लिए ही विद्यार्थीगण अपने सुख एवम् स्वास्थ्य की आहुति देकर पुस्तकों की विषय सामग्री को कण्ठस्थ करने में अपना समय व्यतीत करते हैं। परिणामस्वरूप यह प्रणाली छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान न देकर उनका एकपक्षीय विकास करती है। अभिभावक भी बच्चे के भविष्य की चिन्ता से अपना सर्वस्व उसके पीछे न्यौछावर कर देते हैं, परन्तु उद्देश्यहीन शिक्षा से अपने बच्चे को असफल होते देख निराशा के शिकार हो जाते हैं।

आज समय बदल गया है, देश की परिस्थितियाँ बदल गई हैं, पर खेद का विषय है कि उच्च शिक्षा का जो उद्देश्य भारत के अंग्रेज शासकों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए निर्धारित किया था, वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के वर्षों बाद भी अपने पुरातन रूप में उच्च शिक्षा पर अपना अखण्ड साम्राज्य स्थापित किए हुए है।

यदि हम गहराई से चिन्तन करें तो पाते हैं कि हम इतने दिनों में क्या बने हैं। वकील, इंजीनियर, डॉक्टर और सबसे बढ़कर सरकारी दफ्तरों के नौकर ही बने हैं। जो लोग अपने को स्वाधीन पेशेवर कहते हैं, जैसे वकील, डॉक्टर, इंजीनियर आदि वे भी नाम के ही स्वाधीन हैं। वास्तव में वे उतने ही पराधीन हैं, जितना कि कोई साधारण सरकारी नौकर हो सकता है। वे जहाँ चाहें वहाँ जाकर अपनी विद्या-बुद्धि या कौशल का उपयोग नहीं कर सकते। थोड़े से गिने-चुने शहरों में ही उनका जौहर खुलता और खुल सकता है। जिन साधनों, उपकरणों के जरिए वे अपना काम करते हैं, वे नगरों की ही कृति है, वहीं उनकी प्राप्ति सुलभ है, वही उनका प्रयोग और उपयोग सम्भव है, नौकरी ने तो अफीम की घुट्टी की तरह हमें निर्बल, निश्चेष्ट, निरूद्यम, निरूत्साह बना दिया है। हममें सोचने-समझने यहाँ तक

कि हाथ-पैर चलाने की भी शक्ति बाकी नहीं रह गयी है। नौकरी ने हमें इतना निस्सार बना दिया है, हम संकीर्ण हो चुके हैं।

आज जिस परिस्थिति से हम गुजर रहे हैं वह बड़ी भयंकर है। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है और कोई नहीं कह सकता कि कल क्या हो जाएगा। मायावाद और भोगवाद के दावानल में लगभग संसार के सभी प्राणी जल रहे हैं। धन को प्राप्त करना ही व्यक्ति का उद्देश्य हो गया है चाहे धन सही ढंग से प्राप्त किया जाय या गलत ढंग से।

वर्तमान में विश्वविद्यालयों की शिक्षा तो बहुधा भौतिकवाद और भोगवाद की ओर ले जाने वाली है परन्तु आध्यात्मिक शिक्षा प्रणाली एक ओर भौतिक वस्तुओं पर विजय प्राप्त करने का आदेश देती है वहीं दूसरी ओर शांति के स्रोत बाह्य ज्ञान का भी उपदेश देती है। इसी कारण वर्तमान में इस शिक्षा पद्धति को उचित सम्मान व स्थान प्राप्त नहीं हो रहा है। प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षा पद्धति वर्तमान युग में अनेक विकट समस्याओं से घिरी है, जिस कारण इस पद्धति की शिक्षा का समुचित विकास इस युग में नहीं हो पाया। शनैः शनैः इस प्रकार की पद्धति वर्तमान शिक्षा क्षेत्र में समाप्त हो जाएगी ऐसी सम्भावनाएँ प्रतीत होती हैं।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

आध्यात्मिक शिक्षा का वास्तविक स्वरूप

अध्यात्म विद्या सम्पूर्ण विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या है। इसे अत्यन्त गूढ़ तथा गुहा में अन्तर्हित बताया गया है। उसके लिए नेति नेति कहना ही सबसे उपयुक्त परिभाषा है। इस आत्मतत्व को मनुष्य के मन आदि का प्रेरक तथा अग्नि वायु आदि शक्तियों से अधिक प्रभावशाली निर्धारित किया गया है। हम दर्शनों में ईश्वर और जीव के विषय में जो कुछ प्राप्त करते है उनके सोपाधिक निरुपाधिक सगुण से गुण सृष्टि आदि का कर्ता संहारक जीव के सांसारिक बाह्य और मुक्त सभी प्रकार के स्वरूप का वर्णन उपनिषद् में उपलब्ध होता है।

आध्यात्मिकता से परिपूर्ण मानव में मुख्यतः जो गुण देखने में आते हैं वे हैं बलिदान, त्याग, प्रज्ञा, चिंतन, गुण देखने धर्मपरायणता, आदर्शवादिता, लोकातीत अनुभूति, मोक्ष और मुक्ति के प्रति आकर्षण। ये सभी गुण आध्यात्मिक मूल्यों के सर्वश्रेष्ठ अलंकरण माने जाते हैं। नैतिकता और आध्यात्मिकता दोनों में समन्वय और संयोजन का परिणाम होता है संस्कृति का अभ्युदय। आध्यात्मिकता की अनुभूति बंद कमरे की चाहरदीवारी में नहीं की जा सकती। इसे खुले आसमान की शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है अर्थात् मनुष्य अपने भीतर विद्यमान धार्मिकता को सीमित न कर उसे बाहरी विश्व से जोड़े तो आध्यात्मिकता की अनुभूति से जीवन सुखी हो जाएगा। प्रेम बांटकर ही प्रेम की अनुभूति की जा सकती है। आध्यात्मिकता स्वयं को तो मुक्ति का मार्ग बनाती ही साथ ही इस विचार को जब लोगों की बीच बांटा जाता इसे प्रचारित व प्रसारित किया जाता है तो एक स्वस्थ समाज, एक स्वस्थ सामाजिक परिवेश की कल्पना की जा सकती है जीवन का वह व्यवहार जो मानव को मानव होने का आभास कराये, उसके माध्यम से दूसरे लोगों को भी सद् व्यवहार की ओर प्रेरित करे। इस आधुनिक युग से बाहर निकाल उस युग में प्रवेश कराये कहाँ केवल शांति ही शांति विद्यमान हो। एक ऐसा अद्भुत अनुभव जो मनुष्य को उसके मानव होने के कर्तव्य का भान कराये। हम आध्यात्मिकता के अलंकरण से उसे विभूषित करते हैं। आंतरिक शक्ति व ऊर्जा का विकास ही शिक्षा प्रणाली का ध्येय होना चाहिए ताकि एक स्वस्थ, सुन्दर, समाज की कल्पना को साकार किया जा सके। आध्यात्मिक शिक्षा

का शुभारंभ घर से आरम्भ होता है जब माँ अपने बच्चे को धार्मिक स्थलों का भ्रमण कराती है साथ ही बच्चे को यह अनुभव कराती है कि एक ऐसा भी लोक है और ऐसी शक्ति है जिसे हम परमात्मा की संज्ञा देते हैं। और जो सर्वजगत् को संचालित करती है उस शक्ति की कृपा पाकर स्वयं को पूर्ण करना, उस शक्ति के द्वारा दिए गए सन्मार्ग पर चलना ही हमारी वास्तविक नियति है। स्वयं को समझना, आत्मा को समझना, परमात्मा को समझना ही जीवन का ध्येय होता है यही अध्यात्म है यह अध्यात्म मानव की उत्पति से जुड़े सिद्धांतों उसके प्रयोजनों, परिणामों, विभिन्न दर्शनों का उद्भव, नैतिकता, मान सम्मान, मोक्ष, गति, ललित कलाएं, भक्ति व वेद ग्रंथों में समाहित सत्य व सद्विचारों के मार्ग से होकर गुजरता है। सभी धर्मों में विद्यमान धार्मिक ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य मानव को मोक्ष की प्राप्ति कराना है। उसे यह केवल अध्यात्म के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

वर्तमान भौतिवादी युग से बाहर निकलकर मानव को आध्यात्मिक युग में प्रवेश कराना अध्यात्म का मुख्य उद्देश्य है। अध्यात्म मानव को जब पूर्णता प्रदान करता है, उसे स्वयं से स्वयं का बोध करता है तब वह सीमा में बंधा नहीं रहता वह शांति के मार्ग पर अग्रसर होता है और उसे विश्व शान्ति के प्रचारक के रूप में स्थापित करता है। आध्यात्मिकता की छात्र छाया में आ जाने के बाद मनुष्य के जीवन में रुढ़ियों व अंधविश्वाशों का कोई स्थान नहीं होता। मनुष्य स्वयं को एवं समाज को "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की ओर ले जाने का प्रयास करता है। यह उसकी उन्नति का मुख्य द्वार सिद्ध होता है।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय का महत्व

विविध सन्त-महात्माओं एवं सम्प्रदायों ने भारत की आध्यात्मिक चेतना सहस्रों वर्ष जागृत रखी है। उसे आगे भी जागृत रखने हेतु धर्मग्रन्थों, उपासना पद्धतियों, साधना-मार्गों, धार्मिक विधियों एवं उनका अध्यात्मशास्त्र, देवताओं की उपासना का शास्त्र आदि का एकत्र ज्ञान देने वाला एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय बनाने की आज आवश्यकता है। भारत जब वैभव के शिखर पर था, तब हमारे यहां तक्षशिला, नालंदा, भोजशाला आदि विश्वविद्यालय थे। इसका अर्थ हुआ कि ऐसे विश्वविद्यालयों की पुनर्स्थापना करने से भारत पुनः वैभव के शिखर पर पहुंच जाएगा। इसी बात को ध्यान में रखकर, 'आध्यात्म विश्वविद्यालय' की स्थापना अत्यंत आवश्यक है। आगामी पीढियों को सक्षम बनाना सन्तों का कार्य है निरन्तर ईश्वर के आन्तरिक सान्निध्य में रहकर, ईश्वरकी इच्छा से ईश्वरीय कार्य करना तथा समाज को धर्म शिक्षित करना। समाज को जो चाहिए, वह देने के स्थान पर सन्त वह देते हैं, जो समाज के लिए आवश्यक है। ऐसे सन्त निर्माण करने की क्षमता 'आध्यात्मिक विश्वविद्यालय' में होगी। ऐसे सन्त, सनातन राष्ट्र की स्थापना के कार्य हेतु अपना जीवनपुष्प अर्पित करेंगे तथा सनातन राष्ट्र का दायित्व एवं धर्मसत्ता का नेतृत्व करने के लिए आगामी पीढियों को सक्षम बनाएंगे।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

पाठ्यक्रम

बच्चों युवाओं का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा आज की शिक्षा के लिए अति आवश्यक है। यह एक वैश्विक विचारधारा है इसका बहुत व्यापक क्षेत्र है। वर्तमान आधारभूत सामाजिक समस्याओं के समाधान और वास्तविक धर्म को समझने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। शिक्षा यदि आत्मिक उत्थान में सहायक नहीं होती तो वह सही शिक्षा कहलाने योग्य नहीं है। आज जितनी तीव्र गति से नैतिक क्षरण तथा आदर्शहीनता बढ़ती जा रही है वह समाज जीवन को विकृत बना रही है।

विश्वविद्यालय ने इस चुनौती को स्वीकार कर एक पाठ्यक्रम तैयार किया है जो विभिन्न प्रकार की सनातन परंपराओं के भीतर आध्यात्मिकता की भूमिका को समझने, आध्यात्मिकता और धर्म की सत्य परिभाषा को स्पष्ट करने और यह समझने में मदद करेगा कि यह धार्मिक शिक्षा के अभ्यास से कैसे संभव है? इस दृष्टि से विश्वविद्यालय ने बच्चों, युवाओं और प्रौढ़ वर्गों के लिए आध्यात्मिक शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार किया है। जो इस प्रकार है-

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

प्रमुख संकाय

1- शैक्षणिक संकाय
2- चिकित्सा संकाय

शैक्षणिक संकाय (विभागों के नाम)

1- आध्यात्मिक शिक्षा
2- योग शिक्षा
3- आयुर्वेदिक एवं वनौषधि शिक्षा
4- शास्त्रीय संगीत शिक्षा
5- कृषि एवं पर्यावरण शिक्षा

****नोट- स्थान की उपलब्धता होने पर विभागों में वृद्धि की जा सकती है।***

पाठ्यक्रम

- ✓ **आध्यात्मिक शिक्षा** – श्रीमद् भगवद् गीता, रामायण, नैतिक शिक्षा इत्यादि।
- ✓ **योग शिक्षा** – अष्टांग योग, हठयोग, साधना विज्ञान इत्यादि।
- ✓ **आयुर्वेदिक शिक्षा** – दिनचर्या, आहार विहार, वनौषधि विज्ञान इत्यादि।
- ✓ **शास्त्रीय संगीत शिक्षा** – गायन, वादन, नृत्य एवं लोक-संस्कृति इत्यादि।
- ✓ **कृषि एवं पर्यावरण शिक्षा** – खेती, गौसेवा, वृक्षारोपण इत्यादि।

पाठ्यक्रम (कोर्स) की अवधि

प्रत्येक पाठ्यक्रम में प्रवेशित होने पर एक माह का कोर्स अनिवार्य रूप से पूर्ण करना होगा।

चिकित्सा संकाय (विभागों के नाम)

1- आध्यात्मिक चिकित्सा
2- योग चिकित्सा
3- आयुर्वेदिक चिकित्सा
4- वनौषधि अनुसंधान केन्द्र (रिसर्च)

****नोट- स्थान की उपलब्धता होने पर विभागों में वृद्धि की जा सकती है।***

चिकित्सा पद्धतियां

- **आध्यात्मिक चिकित्सा**- ईष्ट आराधना, उपासना, साधना इत्यादि।
- **योग चिकित्सा** – अष्टांग योग, हठयोग, योग विज्ञान इत्यादि।
- **आयुर्वेदिक चिकित्सा** – प्राकृतिक एवं पंचकर्म चिकित्सा, मर्म चिकित्सा इत्यादि।
- **अनुसंधान (रिसर्च)** – नव औषधि निर्माण, वनौषधि विज्ञान इत्यादि।
- **चिकित्सा विभाग का कार्य** -शारीरिक,मानसिक व्याधिग्रस्त लोगों को निरंतर सेवाएं प्रदान करना।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

योग्यता विवरण

योग्यता – सामान्य पठन - पाठन का ज्ञान।
प्रवेश - साक्षात्कार / आध्यात्मिक ऊर्जा परीक्षण/ सनातनधर्मनिष्ठित शिक्षार्थी।
आयुसीमा - आयु वर्ग – 15-30 वर्ष (प्रथम सोपान - द्वितीय सोपान)
कक्षाएं – प्रतिदिन 2:00 होरा
आयु वर्ग – 31-50 वर्ष (तृतीय सोपान – चतुर्थ सोपान)
कक्षाएं – प्रतिदिन 2:00 होरा
परिधान - भारतीय सनातनी वेशभूषा (धोती, कुर्ता , सूट, साड़ी)।

प्रथम सोपान / द्वितीय सोपान – सामूहिक साप्ताहिक सत्र अभ्यास / कक्षा सत्र अभ्यास
तृतीय सोपान / चतुर्थ सोपान – पूर्ण पाठ्यक्रम अभ्यास / प्रायोगिक प्रशिक्षण

****नोट – एक माह अवधि के इस पाठ्यक्रम (कोर्स) को पूर्ण करने के उपरांत आपका जीवन आध्यात्मिकता से परिपूर्ण और सुखमय होगा। विद्यार्थी / शिक्षार्थी किसी भी क्षेत्र में उन्नति पथ पर अग्रसर होगा।***

समय सारणी

चिकित्सा संकाय	शैक्षणिक संकाय
समय- प्रातः 9:00 बजे से 2:00 बजे तक	समय- सांयकाल 3:00 बजे से 7:00 बजे तक

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

प्रकाशन विभाग / ग्रंथालय

1- ज्ञान सिद्धि
2- योग सिद्धि
3- आध्यात्मिक विश्वविद्यालय पत्रिका
4- आध्यात्मिक विश्वविद्यालय चैनल
5- धार्मिक पुस्तकालय

पिथौरागढ़ में 'आध्यात्मिक विश्वविद्यालय' के निर्माण हेतु सहायता करने की विनती।

सनातनधर्म संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए निर्माण हो रहे इस ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों में निम्न वस्तुओं का दान कर सहयोग करने की कृपा कीजिएगा।

1. निर्माण-कार्यकी सामग्री (रेत, ईंटें, सीमेंट, रंग, पट्टियां इ.) एवं विद्युत उपकरण (पंखे, दंडदीप (ट्यूबलाइट), बिजलीके तार, स्विचबोर्ड इत्यादि) दान करें !
2. शिक्षा एवं निवास हेतु आवश्यक वस्तुएं, उदा. संगणक, संगणक पटल, आसंदियां (कुर्सियां), कपाटिका, पलंग, अन्य 'फर्नीचर', बिस्तर इत्यादि अर्पित करें!
3. ग्रन्थालय हेतु धर्मग्रन्थ, विविध धर्मग्रन्थोंपर भाष्य, अध्यात्म, साधना, सन्त-चरित्र, इतिहास, राष्ट्रजागृति, धर्मजागृति आदि विषयों के ग्रन्थ भेंट में दें !
4. विश्वविद्यालयके निर्माण हेतु नकद राशि, धनादेश अथवा 'इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रॉन्सफर' द्वारा धनस्वरूपमें दान करें! इसके लिए, 'अध्यात्म विश्वविद्यालय' के फाउंडेशन का खाता-विवरण निम्नांकित है-

विश्वविद्यालय निर्माण के लिए फाउंडेशन का खाता विवरण

संस्था का नाम - आध्यात्मिक पद्धति फाउंडेशन
बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक
खाता संख्या 20512936562
आईएफएससी कोड - SBIN0010591
शाखा- 69, M Bridge, Kashni Bin, Pithoragarh, Uttarakhand
भारत सरकार द्वारा पंजीकृत संस्थान – आयकर विभाग द्वारा प्रमाणित, 12A, 80G रजिस्ट्रड।

अध्यात्म, योग, आयुर्वेद द्वारा आत्मा, मन, शरीर की पूर्ण चिकित्सा का एकमात्र धार्मिक संस्थान
सहायक संस्थान - भक्ति योग फाउंडेशन

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

पाठ्यक्रम का नाम/उपाधि

क्रमांक	पाठ्यक्रम/ कोर्स का नाम	उपाधि	अवधि
1	आध्यात्मिक शिक्षा	आध्यात्मिक शिक्षक	------
2	योग शिक्षा	योग शिक्षक	-------
3	संगीत शिक्षा	संगीत शिक्षक	-------
4	पंचकर्म/ प्राकृतिक चिकित्सा	आयुर्वेदिक विशेषज्ञ	-------
5	कृषि एवं पर्यावरण	पर्यावरण विशेषज्ञ	

****उपरोक्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।**

विश्वविद्यालय के प्रमुख पदाधिकारी गण

क्रमांक	नाम	पद
1.	स्वामी श्री डॉ गुरूकुलानन्द कच्चाहारी	कुलाधिपति
2.	आचार्य आशुतोष दीक्षित	कुलपति
3.	----------	कुल सचिव
4.	----------	वित्त नियंत्रक

विश्वविद्यालय समिति परामर्श मंडल

क्रमांक	नाम	पद
1	श्री दिवाकर जोशी	अध्यक्ष
2	श्री नरेन्द्र चंद	उपाध्यक्ष
3	डॉ तारा सिंह	सदस्य
4	श्री गणेश भगतजी	सदस्य
5	श्री हरीश अरोड़ा	सदस्य
6	डॉ निशांत अग्रवाल	सदस्य
7	श्री विपिन जोशी	सदस्य
8	श्री अनिल चौबे	सदस्य
9	श्री कैलाश भट्ट	सदस्य
10	श्री रामचन्द्र भट्ट	सदस्य
11	श्री नारायण सोराडी	सदस्य

शैक्षणिक संकाय / शिक्षक वर्ग

क्रमांक	नाम	पद
1	डॉ अश्विनी शुक्ला	संस्कृत व्याख्याता
2	श्री वत्स देश राज शर्मा	संस्कृत व्याख्याता

चिकित्सा संकाय / चिकित्सक वर्ग

क्रमांक	नाम	पद
1	डॉ संगीता अग्रवाल	विशेषज्ञ
2	डॉ मोनिका बिष्ट	आयुर्वेद चिकित्सक
3	आचार्य विजय प्रकाश जोशी	योग चिकित्सक
4	श्री मयंक कुमार	परिचायक
5	श्रीमती ममता नेगी	परिचायिका

प्रकाशन विभाग एवं तकनीकी विभाग

क्रमांक	नाम	पद
1	श्री राजीव गोयल	पत्रिका संपादक
2	श्री रजनीश रामकृष्ण जोशी	पत्रिका संपादक
3	श्री प्रशांत श्रीवास्तव	पुस्तक प्रकाशक
4	श्री अनुराग कुमार	तकनीकी सहायक
5	डॉ नीरज चन्द्र जोशी	टीवी चैनल प्रभारी

कार्यालय सहायक/कर्मचारी वर्ग

क्रमांक	नाम	पद
1	सुश्री योगिता वल्दिया	कार्यालय सहायक

2	सुश्री दीपाली	लिपिक
3	श्री अजय बोहरा	सहायक लिपिक
4	श्री नवीन कुमार टम्टा	वाहन चालक

निर्माण समिति के सदस्यगण

क्रमांक	नाम	पद
1	श्री चन्द्रशेखर नगरकोटी	समिति अध्यक्ष
2	श्री निखिल जामकर	निर्माता

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय निर्माण हेतु सहयोग करने वाले सदस्यगणों की सूची

(अग्रिम अंक में अन्य सभी सहयोगियों का नाम पत्रिका एवं विश्वविद्यालय पट्ट पर अंकित किया जाएगा।

क्रमांक	नाम	पद	सहयोग राशि
1.	आचार्य विजय प्रकाश जोशी	आयुर्वेद विशेषज्ञ	21000/-
2.	श्रीमती संगीता अग्रवाल	चिकित्सक	5000/-
3.	डॉ निशांत अग्रवाल	चिकित्सक	2100/-

नोट- यदि आप भी स्वयं व अपने परिवार एवं समाज को आध्यात्मिकता से जोड़ना चाहते हैं तो विश्वविद्यालय समिति में सदस्यता अवश्य ग्रहण करें। सदस्यता/प्रवेश सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्न संपर्क सूत्रों में संपर्क कीजिएगा।

कार्यालय

शिवाश्रम, बिण, एपीएस तिराहा,पिथौरागढ़, उत्तराखंड, भारत (पिन कोड -262501)
संपर्क सूत्र – 9728877928, 9917712188,9935724204
ईमेल – Aadhyatmikuniversity@gmail.com
वेबसाइट – Www. Aadhyatmikuniversity.in

आइए बढ़े ---

अध्यात्म मार्ग की ओर .....

आत्मज्ञान की ओर.....

आत्म मंथन की ओर.....

॥ इति शुभम्॥

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

सनातनधर्म संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय

संदेश पत्र

संकल्प – संपूर्ण विश्व एवं राष्ट्र में अध्यात्म दर्शन, भक्ति योग, आत्मानुभूति, प्रेम, शांति, सद्भावना, विश्वबंधुत्व जागरण।

उद्देश्य - संपूर्ण विश्व एवं राष्ट्र को अध्यात्म – योग - आयुर्वेद पर शोधपरक, अनुभूतिपरक, सैद्धांतिक विधियों, यौगिक साधनाओं द्वारा मानव जीवन के परम लक्ष्य आत्मदर्शन की ओर प्रेरित करना।

प्रिय सनातनधर्म प्रेमियों,

भारतीय सनातन धर्म संस्कृति एवं प्राच्य ज्ञान विज्ञान परम्परा के संवर्धन एवं व्यापक प्रचार प्रसार के लिए समस्त सनातन धर्मानुलंबी जनमानस के सहयोग करने की कृपा कीजिएगा।

सनातन धर्म-संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान को जन जन पहुंचाने के लिए आश्रम द्वारा निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। भक्ति योग के प्रचार-प्रसार से आदर्श राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ जनमानस में भक्ति,प्रेम, सौहार्द की भावना जागृत होगी। प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान परम्परा से विश्व को परिचित कराया जा सकेगा। संतों, महात्माओं, विद्वानों, आचार्यों पुरोहितों और समस्त सनातन धर्मानुलंबियों को संगठित करके विश्वबंधुत्व एवं सनातन ऐक्य भाव को जागृत करने का प्रयास किया जा सकता हैं साथ ही अनेक पंथ सम्प्रदायों में विभाजित हो रहे सनातनधर्म को वसुधैव कुटुम्बम् की माला में पिरो सकते हैं। अतः समस्त प्रबुद्ध जनमानस से विनम्र निवेदन करते हैं कि इस धर्मार्थ कार्य में सहयोग एवं मार्गदर्शन कर आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में जुडने की कृपा कीजिएगा।

आध्यात्मिक पद्धति फाउंडेशन के प्रमुख उद्देश्य

1. समस्त भारतवर्ष में भक्ति योग के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए अभियान (मिशन) चलाना।
2. भारतीय अध्यात्म दर्शन, योग दर्शन, ध्यान, साधना, आयुर्वेदिक चिकित्सा (प्राकृतिक चिकित्सा, पंचकर्म), पंचगव्य चिकित्सा, शास्त्रीय संगीत, कला, संस्कृति का प्रचार – प्रसार एवं संवर्द्धन करना।
3. आध्यात्मिक ज्ञान (ध्यान, योग, उपासना, आत्मानुभूति) से जनमानस को परिचित कराना।
4. शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा, स्वच्छता आदि क्षेत्रों में विशेष रूप कार्य करना अथवा सहयोग प्रदान करना।
5. अध्यात्म दर्शन, योग दर्शन, आयुर्वेदिक औषधियों, वनौषधियों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए शोधपत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों का प्रकाशन करना।
6. प्राचीन भारतीय संस्कृति, अध्यात्म दर्शन, योग, आयुर्वेद, संगीत, कला के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षण,प्रशिक्षण संस्थानों / केन्द्रों की स्थापना करना।
7. आध्यात्मिक केन्द्र, शोध केंद्र, आरोग्य केंद्र, गौसेवा केन्द्र, पशु पक्षी संरक्षण केंद्र, वृद्धाश्रम, धार्मिक पर्यटन केंद्र, असहाय आश्रित केन्द्र, जीव जन्तु सेवा केन्द्र, पर्यावरण संरक्षण केंन्द्रों की स्थापना करना।
8. कथा, प्रवचन, सत्संग, कार्यशाला सेमिनार, सम्मेलन, प्रदर्शनी, प्रतियोगिता, मिशन, अभियान, धार्मिक आयोजनों का संचालन करना।
9. देवभूमि उत्तराखंड के वैदिक व पौराणिक महत्त्वता, लोक कला, लोक संस्कृति, लोक साहित्य का प्रचार प्रसार करना।
10. प्राचीन वैदिक विज्ञान, योग विज्ञान, आयुर्वेद विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान एवं आध्यात्मिक विज्ञान पर अनुसंधान करना।
11. प्रदेश के अन्य जिलों में शाखाएँ खोलना एवं प्रदेश में पहले से कार्यरत इस प्रकार की संस्थाओं को सम्बद्ध करना एवं सम्बद्ध होना।

फाउंडेशन द्वारा किए गए कार्यों का विवरण

1. योग महोत्सव आयोजित (2020) स्थान - एल एस एम पीजी कॉलेज पिथौरागढ़।
2. योग महोत्सव आयोजित (2022) स्थान वी 2 योगशाला, कासनी, पिथौरागढ़।
3. आश्रम के 10 छात्रों द्वारा योग आसनों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व रिकॉर्ड दर्ज।
4. अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक योग महोत्सव (21 जून से 20 जून 2023 तक) स्थान ग्राम देवल, पो. जाजरदेवल, पिथौरागढ़।
5. पंचदश दिवसीय निःशुल्क योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर (1 से 15 अगस्त 2023 तक) स्थान होटल पार्क रॉयल, नियर सल्मोडा पेट्रोल पंप जाजरदेवल, पिथौरागढ़।
6. ज्ञानोदय महोत्सव (6, 7 सितंबर 2023) स्थान श्रीरामलीला मैदान, नियर नगर पालिका, पिथौरागढ़।
7. श्रीगणेशोत्सव (दिनांक 19 से 28 सितंबर 2023) स्थान होटल पार्क रॉयल, नियर सल्मोडा पेट्रोल पंप जाजरदेवल, पिथौरागढ़।
8. स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत दिनांक 5/10/2023 को नगर पालिका परिषद् पिथौरागढ़ के साथ संयोजक के रूप में कार्य किया गया साथ ही गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया गया।
9. श्रीशिवाश्रम द्वारा आयोजित विश्व रिकॉर्ड अभियान (दिनांक 5/10/2023) में सबसे कम समय में शीर्षासन में हनुमान चालीसा पाठ करने का विश्व रिकॉर्ड (गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड) बनाया गया। स्थान देवसिंह मैदान पिथौरागढ़
10. निःशुल्क योग प्रशिक्षक, आयुर्वेद परिचायक प्रशिक्षण कोर्सेज का संचालन।
11. आरोग्यम् महोत्सव (दिनांक 1 से 3 जनवरी 2024) तक आयोजित। स्थान शाखा कार्यालय बिण, पिथौरागढ़।

12. श्रीराम महायज (दिनांक 21/22 जनवरी, 2024) तक आयोजित। स्थान श्री रामलीला मैदान, नियर नगरपालिका, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)
13. श्री शिव महापुराण कथा (दिनांक 21-27 अप्रैल, 2024) स्थान शाखा कार्यालय बिण, पिथौरागढ़।
14. गुरु गोरखनाथ कथा (23-31 मई, 2024) गुरु गोरखनाथ मंदिर, सिलौली, पिथौरागढ़, उत्तराखंड
15. भक्ति संगीत महोत्सव (1-21 जुलाई, 2024) श्री रामलीला खेल मैदान, पण्डा, पिथौरागढ़
16. श्रावण महोत्सव धार्मिक मेला (1-26 अगस्त, 2024) सुमंगलम् बैंक्वेट हॉल, निकट प्लाजा होटल, पिथौरागढ़।
17. आध्यात्मिक विश्वविद्यालय निर्माण हेतु व्यापक अभियान जारी है……

सेवाएं

1. निःशुल्क योग शिविर।
2. निःशुल्क आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा / पंचकर्म परामर्श उपचार।
3. आध्यात्मिक शिक्षा जैसे श्रीमद्भगवद्गीता प्रवचन, वेदशास्त्रादि प्रवचन, शास्त्रीय संगीत, भजन एवं शास्त्रीय नृत्य आदि।
4. आयुष्मान कार्ड एवं आर्मी परिवारों के लिए निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा, पंचकर्म थैरेपी।
5. निर्धन एवं गरीब लोगों को निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरण।
6. विद्यालय / महाविद्यालय छात्रों को निःशुल्क अध्यात्म योग आयुर्वेदिक रोजगारपरक प्रशिक्षण।
7. गौसेवा / पशु पक्षी संरक्षण एवं पर्यावरण संबंधी कार्यों में निरंतर सेवा कार्य।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

आपके द्वारा दिया गया अल्प सहयोग से संपूर्ण विश्व एवं राष्ट्र में सनातन धर्म संस्कृति एवं भक्ति योग के प्रचार-प्रसार में हम सभी में नवचेतना का संचार करेगा।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
पिथौरागढ़, उत्तराखंड